Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

भारतीय स्वतंत्रता में गांधीजी की भूमिका

Rajesh Kumar*

VPO-Barsana, Tehsil-Pubdri, District-Kaithal, Haryana

सार - ***गाँधी जी के पिता की शिक्षा अनुभव की थी और उनका व्यवहारिक ज्ञान इतने उच्च स्तर का था कि उन्हें बारीक से बारीक सवालों को सुलझाने में कोई कठिनाई नहीं होती थी। गाँधी जी की माता एक साध्वी महिला थीं जो पूजा-पाठ सम्पन्न किए बिना भोजन ग्रहण नहीं करती थी। इस प्रकार बालक मोहनदास करमचन्द को पिता से सत्यपरायणता और माता से धार्मिक संस्कार प्राप्त हुए। गाँधी जी का बचपन पोरबन्दर में बीता। जब इनकी उम्र सात वर्ष की हो गयी तो इनके पिता पोरबन्दर से राजकोट चले आये। राजकोट ही मोहनदास का दूसरा घर बन गया। प्रारम्भिक शिक्षा राजकोट में हुई। गाँधी जी का विवाह 13 वर्ष की आयु में कस्तूरबाबाई के साथ हुआ जो पोरबन्दर के व्यापारी गोकुलदास मकन जी की पुत्री थी। वह शिक्षित न होते हुए भी गृह कार्य में अत्यन्त दक्ष थीं।***

----------X----------

परिचय

अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई. को गुजरात काठियाबाड़ के पोरबन्दर नामक स्थान में एक धार्मिक विचारधारा वाले परिवार में हुआ था। बचपन में इनका नाम मोहनदास करमचन्द था। उनके पिता करमचन्द पोरबन्दर राज्य के दीवान थे। वे अपनी सदाचारिता और निष्पक्षता के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। उनकी माता पुतलीबाई एक साधू प्रकृति की अत्यन्त धार्मिक महिला थीं, जिनका गाँधी जी के जीवन पर युगान्तकारी प्रभाव पड़ा। मोहनदास तीन भाई एवं एक बहन थे। भाइयों का नाम लक्ष्मीदास, कृष्णदास तथा मोहनदास एवं बहन का नाम रलियात था।

गाँधी जी के पिता की शिक्षा अनुभव की थी और उनका व्यवहारिक ज्ञान इतने उच्च स्तर का था कि उन्हें बारीक से बारीक सवालों को सुलझाने में कोई कठिनाई नहीं होती थी। गाँधी जी की माता एक साध्वी महिला थीं जो पूजा-पाठ सम्पन्न किए बिना भोजन ग्रहण नहीं करती थी। इस प्रकार बालक मोहनदास करमचन्द को पिता से सत्यपरायणता और माता से धार्मिक संस्कार प्राप्त हुए। गाँधी जी का बचपन पोरबन्दर में बीता। जब इनकी उम्र सात वर्ष की हो गयी तो इनके पिता पोरबन्दर से राजकोट चले आये। राजकोट ही मोहनदास का दूसरा घर बन गया। प्रारम्भिक शिक्षा राजकोट में हुई। गाँधी जी का विवाह 13 वर्ष की आयु में कस्तूरबाबाई के साथ हुआ जो पोरबन्दर के व्यापारी गोकुलदास मकन जी की पुत्री थी। वह शिक्षित न होते हुए भी गृह कार्य में अत्यन्त दक्ष थीं।

1887 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त गाँधी जी कानून की शिक्षा ग्रहण करने हेतु इंग्लैण्ड चले गये। मोहनदास को यूरोप का जीवन भारतवर्ष से कितना भिन्न है, इसका आभास उन्हें इंलैण्ड पहुँचते ही हो गया था।

गाँधीजी ने राजनीति में नैतिकता और ईमानदारी को अनिवार्य बताया। उनके अनुसार राजनीति में धोखाधड़ी, असत्य और अहिंसा का कोई स्थान नहीं है। उनकी निगाह में चरित्र की निर्मलता और साधन की पवित्रता के बिना किसी महान् लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत को आजादी हिंसा के द्वारा नहीं मिल सकती। वे धर्म और राजनीति को अलग नहीं मानते थे।

उनके लिए अधर्म पर आधारित राज्य सर्वथा त्याज्य था। वे भारतीय राष्ट्रीयता के सच्चे प्रतिनिधि थे तथा वे हर तरह के भेदभाव को मिटाकर समस्त देशवासियों को एक सूत्र में बाँधना चाहते थे। वे धर्म, भाषा और प्रांत के भेदभाव से बिल्कुल ऊपर थे। उनकी दृष्टि में धर्म और राजनीति दोनों ही मानवता की सेवा के साधन है।

गाँधीजी ने स्त्रियों, दलितों और गरीबों के उत्थान में ही अपने जीवन की सार्थकता समझी। उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में छुआछूत, अमीर-गरीब और ऊँच-नीच के भेदभाव को हटाकर सारे भारतवासियों को एक प्रेम-सूत्र में बाँधने का प्रयत्न

www.ignited.in

किया। उनके चुम्बकीय व्यक्तित्व ने अनेक प्रतिभाशाली और त्यागी नेताओं को खींचकर राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय बना दिया।

महात्मा गाँधी ने राजनीति में सत्य, अहिंसा एवं सत्याग्रह की अभिनव रणनीति का सफल एवं लोकप्रिय प्रयोग शुरू किया। उनके अनुसार सत्याग्रह अन्याय एवं उत्पीड़न के विरुद्ध शुद्धतम आत्मबल का प्रयोग है। सत्याग्रह में अपनी आत्मशक्ति से प्रेरित व्यक्ति सत्य का आग्रह करता है जो किसी व्यक्ति के विरुद्ध या समक्ष भी हो सकता है और किसी सामाजिक या राजनीतिक शक्ति और यहां तक कि सरकार के भी विरुद्ध हो सकता है। गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रह मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। यह पवित्र अधिकार भी है और पवित्र कर्तव्य भी। सरकार यदि अन्यायी हो जाए तो उनके विरुद्ध भी सत्याग्रह हमारा अधिकार और कर्तव्य दोनों हैं।

अध्ययन का महत्व

1. **नीति निर्माताओं हेतु महत्व** - प्रस्तुत अध्ययन वैश्वीकृत युग में भारतीय राजव्यवस्था वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण के कारण किन-किन समस्याओं का सामना कर रही है तथा इस हेतु गाँधी का राज-आर्थिकी दर्शन किस प्रकार सहायक हो सकता है का विवेचन एवं विश्लेषण करने का प्रयास किया जाएगा। अतः अध्ययन द्वारा नीति निर्माता गाँधीय प्रतिमान के आधार पर नीतियों एवं योजनाओं का निर्माण कर सकेंगे।

2. **प्रशासनिक व्यवस्था हेतु महत्व** - राजव्यवस्था की नीतियों को क्रियान्वित करने का कार्य प्रशासनिक वर्ग द्वारा किया जाता है। अतः 21वीं शताब्दी में बदलते वैश्विक बाजारीकरण एवं भौतिकवादी युग में गाँधी 'राज-आर्थिकी दर्शन' के अनुसार नीतियों का क्रियान्वयन तथा गाँधी के मूल्यों की स्थापना व्यवहारिक रूप में किस प्रकार की जा सकती है हेतु प्रस्तुत अध्ययन महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. **जन सामान्य हेतु** - 21वी शताब्दी में वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण के परिणामस्वरूप परिवर्तित परिदृश्य का प्रभाव सर्वत्र दिखाई दे रहा है। भारतीय संदर्भ में समसामयिक इस 'राज-आर्थिकी दर्शन' के कारण आम जनता पर नकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होते हैं। अधिक भौतिकतावाद के कारण जो सामाजिक, सांस्कृतिक, मानसिक त्रासदी शुरू हुई है, इसका उचित उपाय गाँधी का राज-आर्थिकी दर्शन हो सकता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन अमीर-गरीब में आर्थिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत अध्ययन द्वारा खोजने का प्रयास किया जाएगा। अतः जन सामान्य से जुड़े विचारों, मूल्यों, धारणाओं तथा जीवन के तरीके को आयाम देने में अध्ययन महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

4. **मानवीय मूल्यों की पूर्ण स्थापना हेतु** - प्रस्तुत अध्ययन में गाँधी दर्शन के प्रमुख सिद्धांतों साधनों एवं तकनीकों का विस्तृत विवेचन करते हुए तात्कालिक समय में किस प्रकार सफल सिद्ध हुए को ध्यान में रखते हुए वर्तमान वैश्विक दौर की 21वीं शताब्दी में जहाँ संघर्ष, विवाद, हिंसा तथा असत्य जैसे मूल्य प्रभावी हो रहे हैं के निस्तारण हेतु गाँधी दर्शन में निहित सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, अपरिग्रह तथा ट्रस्टीशिप जैसे साधन एवं तकनीकें कैसे कारगर सिद्ध होगी को स्पष्ट करने का प्रयास करते हुए वर्तमान युग के अनुरूप गाँधी प्रतिमान को सुस्थापित करने में अध्ययन उपयोगी होगा। अतः अध्ययन मानवीय मूल्यों को गाँधी दर्शन के अनुरूप की पुनस्थाना हेतु महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

5. **राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों हेतु** - गाँधी चिंतन राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों हेतु सदैव आकर्षण एवं महत्वपूर्ण विषय रहा है अतः प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था को गाँधीय दर्शन के आधार पर चिंतन करने हेतु, विद्यार्थियों को दिशा प्रदान करेगा।

6. **शोध विद्यार्थियों हेत** - प्रस्तुत अध्ययन शोध विद्यार्थियों को जो गाँधी दर्शन पर शोध करना चाहते हैं कि नयी दिशा सोच एवं आयाम प्रस्तुत करने के साथ-साथ विषय सामग्री प्रदान करेगा।

साहित्य का सर्वेक्षण करने का प्रयास किया गया है।

विद्या जैन (2012) - प्रस्तुत पुस्तक में यह कहा गया है कि भूमण्डलीय के इस दौर में बाजार हमारे जीवन पर हावी होता जा रहा है। भौतिकता की और बढते हमारे आसक्ति ने नैतिक मूल्यों को हाशिये पर धकेल दिया है। आगे निकलने की होड में मनुष्यता दम तोडती हुई नजर आती है। ऐसा केवल राजनीति क्षेत्र में नही हो रहा है बल्कि पर्यावरण, समाज, संस्कृति के क्षेत्र में भी ऐसा ही हो रहा है। आज परिस्थितियों की जटिलता ने गाँधी को अत्यधिक प्रासंगिक

बना दिया है। प्रस्तुत पुस्तक में आज के संदर्भो में गाँधी चिन्तन की उपादेयता को समझने का प्रयास किया गया है।

अनिल दत्त मिश्र (2012) - प्रस्तुत पुस्तक में गाँधी अध्ययन और संस्थानो के क्षेत्र में दो दशको के अनुसंधान, अध्यापन और प्रशासनिक अनुभव का नतीजा है। सामान्य पाठको के लिए लिखी गई है। गाँधी जी एक अध्ययन समूची दुनिया को गुंजायमान कर रहे महात्मा गाँधी की मूलभूत धारणाओ का गहन विश्लेषण करती है। आम लोगो के बीच से बहुत बडी शखसियत के रूप में उभरे और उन्होने लाखो लोगो को राजनीति, सामाजिक, आर्थिक और मानवीय स्वतन्त्रता के प्रति जागरूक बनाया गया।

ब्रहमदत्त शर्मा (2011) - प्रस्तुत लेख 'गाँधी चिन्तन में राष्ट्रवाद' पुस्तक में भारतीय राष्ट्रवाद के कमिक विकास एवं विभिन्न स्वरूपों का विवेचन किया गया है। प्रस्तुत लेख में गाँधी के अंतर्राष्ट्रवाद का भी विवेचन किया गया है। गाँधी संकीर्ण राष्ट्रवाद के पक्षधर नही थे। उन्होने राष्ट्रवाद को ब्रिटिश सरकार के सहयोगी के रूप में प्रस्तुत किया करने का प्रयास किया है। इसमें विराम गंज की चुंगी की समाप्ति, अहमदाबाद सत्याग्रह, खेडा आन्दोलन, चम्पारन आन्दोलन का भी विवेचन किया है।

इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्यायों में इनके द्वारा चलाये गये असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोडो आन्दोलन के कार्यक्रमो का एवं कार्य प्रणालीका विवचेन किया है। प्रस्तुत अध्याय में गाँधी द्वारा चलाये गये राष्ट्रवादी आन्दोलनों का स्वतन्त्रता प्राप्ति में योगदान का भी मूल्यांकन प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

दीपांषु अग्रवाल (2011) - प्रस्तुत पुस्तक में कहा गया है कि गाँधी जी की विचारधारा का स्त्रोत उनकी लेखनी नही बल्कि उनकी जीवनी है। गाँधीजी ने स्वयं कई बार स्पष्ट कहा है कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है उनके संघर्ष का प्रारम्भ उनके दक्षिण अफ्रीका के प्रवास से हुआ। वहाँ की क्रूर आर्थिक और सामाजिक अमानवीय व्यवस्था को देखकर गाँधीजी ने अहसयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलन वहाँ की शासन व्यवस्था के विरूद्व चलाया। गाँधीजी आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक रूढिवादिता और धर्मान्धता के कट्टविरोधी थे। गाँधी जी की दृष्टि में अर्थशास्त्र शब्द के 'अर्थ' को धर्म से जोडे बिना ना तो कोई चिन्तन किया जा सकता है और ना ही कोई क्रियाकलाप किया जा सकता है। उनकी आर्थिक नीति की अवधारणा मानवता पर आधारित है। वे राजसत्ता को मानवता का अनुगामी मानते है। सर्वधर्म समभाठ स्वदेशी वस्तुओ का उपयोग, अस्पृश्यता निवारण, शारिरीक श्रम ट्रस्टशिप, सत्याग्रह आदि गाँधीजी के अमोध अस्त्र है, जो उनके सिद्वान्तो के मूलाधार भी है। अतः इस पुस्तक में महात्मा गाँधी के आर्थिक विचार आज के संदर्भ में किस प्रकार प्रांसगिक है इनका विश्लेषण किया गया है।

डॉ. हरिदास रामजी शेण्डे सुदर्शन (2011) - प्रस्तुत पुस्तक को तीन खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रथम खण्ड में गाँधी के आर्थिक विचार, कुटीर उद्योग धंधो का सर्मथन, व्यक्तिगत समत्ति और प्रन्यास धारणा, अपरिग्रह का सिद्वान्त, वर्ग सहयोग की धारणा एवं उनके सामाजिक विचार, वर्णव्यवस्था, अस्पृश्यता का अंत, सांप्रदायिक एकता आदि को स्थान दिया गया है। द्वितीय खण्ड में भारतीय प्रसिद्व महापुरूषों के प्रति विचार प्रस्तुत किये गये है ओर पुस्तक के तृतीय खण्ड में गाँधी के विचार प्रस्तुत किये गये है जो इस प्रकार है- राजनीति के रूप में असहयोग, क्रान्ति-अहिंसा, खादी चरखा, सत्याग्रह, सर्वोदय, खेती, व्यापार आदि विचारो को स्थान दिया गया है।

डॉ. श्रीमती रष्मि चतुर्वेदी (2011) -प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य गाँधी युगीन राष्ट्रीय आंदोलन की आर्थिक पृष्ठभूमि का विवेचन एवं विश्लेषण करना है। मानव जाति के इतिहास के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राजनीति एवं आर्थिक परिस्थितियों का परस्पर गहन सम्बन्ध रहा है। आर्थिक परिस्थितयों में परिवर्तन से राजनीतिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन से आर्थिक परिस्थितियां सदैव ही प्रभावित हुई दिखाई पडती हैं। इस पुस्तक में गांधी युग में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में आर्थिक मुद्दो परिस्थितियों एवं गांधीजी के आर्थिक कार्यक्रमों का वर्णन किया गया है।

रामजी सिंह (2011) - प्रस्तुत पुस्तक में गाँधी ने मानवता के भविष्य के विषय में लिखा है मानव विश्व में बुद्धि और विवके लेकर आया है, लेकिन चूँकि वह अनेक कामनाओं वाला होता है। सृष्टि की सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या भी बन जाता है। उसका अनेकानेक कठिनाईयों के बावजूद भी उसका अस्तित्व कामय रहता है। इस बात का द्योंतक है कि उसमें विनाश से अधिक रचना, विखंडन से अधिक एकात्मकता का तत्व है। गाँधी के अनुसार जब ईश्वर एक है तो मानवता भी एक और अखंडित है। इसलिए गाँधी जी मानव सेवा को ही ईश्वर की पूजा समझते थे। लेकिन अहिंसा एवं शान्ति की बुनियाद के लिए आवश्यक है कि हमारी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक संरचना मे भी अहिंसा के तत्व है। इस प्रकार से गाँधी के

सर्वागींण विचारो को यहाँ उपस्थित किया है। जीवन अखंड है, इसलिए गाँधी विचार भी समग्रता में आता है।

डॉ. एम. के. मिश्रा, डॉ. कमल दाधीच (2011) - प्रस्तुत पुस्तक 'गाँधी दर्शन' समग्र जीवन का दर्शन है। गाँधीजी केवल राजनीतिक नेता नही थे। वे इससे ऊपरथे। गाँधीजी का दर्शन, व्यवहार और सिद्धान्त का अनूठा समन्वय हैं। उनके विचार उनके विभिन्न प्रयोगो और अनुभवो की उपज थे। गाँधीजी ने अपनी 'आत्मकथा' को 'सत्य के प्रयोग' नाम दिया था। गांधीजी अपने राजनीतिक प्रयोगो की अपेक्षा अपने आध्यात्मिक प्रयोगो को अधिक महत्व देते थे। इस प्रकार गांधीजी ने गाँधी दर्शन मे सत्य, बौद्धिक दर्शन, दार्शनिक स्वरूप, धर्मनिरपेक्षता, ग्रामस्वराज्य की अवधारणा, समाज दर्शन, आर्थिक दर्शन, राजनीतिक प्रगतिदर्शन आदि के बारे में विचार व्यक्त किये है।

एम.कुमार, दीप्ति शर्मा (2011) - प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न लेखों को संकलित कर सम्पादित की गई है। गाँधीजी का ईश्वर में अटूट विश्वास था। 'सादा जीवन, उच्च विचार' उनके जीवन का मूल मंत्र था। महात्मा गाँधी का जीवन दर्शन मौलिकता लिए हुए था। वे आदर्शवाद में विष्वास रखते थे। गाँधीजी की दृष्टि में भौतिक जगत भी महत्वपूर्ण था। और सत्य की प्राप्ति इस विश्व में रहकर करना चाहते थे। गाँधीजी ने लिखा- "मैने किसी भी नवीन वस्तु की खोज नही की परन्तु परम्परा से चले आ रहे सत्यों का वर्तमान युग के लिए पुनः विवेचन किया गया है। और उन सत्यों का समाज के सामुहित जीवन में प्रयोग किया है। इस पुस्तक में गाँधी के राजनीतिक, आर्थिक, सर्वोदय, आदि के बारे में अध्यय प्रस्तुत किये है।

डॉ. हरदयाल सिंह राठौड़ (2011) - प्रस्तुत पुस्तक ने महात्मा गाँधी के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक विचारों तथा उनके व्यक्त्वि व नेतृत्व का समकालीन भारतीय राजनीति एवं भारतीय राष्ट्रनिर्माण के स्वरूप पर गहरा प्रभाव रहा है। उन्होंने तत्कालीन विश्व में चल रहे, राजनीतिक प्रयोगो की असंगतियों से हटकर राजनीतिक व्यवस्था के संदर्भ में एक मौलिक चिन्तन किया है। उनके दिये गये सिद्धान्तो न 20वीं शताब्दी में भी लोगों को सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। अगर विश्व में शान्ति चाहिए तो एक ही रास्ता है- अहिंसा। इस प्रकार महात्मा गाँधीजी कोरे राजनीतिक चिन्तक ही नहीं थे। उससे बड़े कर्मयोद्धा भी थे। गांधीजी के विचारो के अनुरूप ही आज के समय में युद्ध हिंसा एवं शस्त्र निर्माण, परमाणु बम की विनाशकता के विरोध में वातावरण बनाया जा सकता है। आज भारत को पुनः गाँधीजी को और अधिक सक्रियता से विश्व की समस्याओं के समाधान के लिए विचार एवं कर्म दोनो ही दृष्टियों से विश्व रंगमंच पर लाना होगा।

लुई फिशर (2010) -प्रस्तुत पुस्तक में कहा गया है कि गाँधीजी का जीवन अपने परिवार या देश तक ही सीमित नही था। वह सारी मानवता के लिए था। इसलिए यह पुस्तक केवल गाँधीजी की कहानी नही है बल्कि भारत के स्वन्त्रता संग्राम और सारी मानवता के प्रति उनकी भावनाओं और कार्यो का अपने ढंग का इतिहास भी है। लुई फिशर सिद्धान्त पत्रकार थे। सारी सामग्री को उन्होने इस तरह से प्रस्तुत किया है कि पुस्तक पढने में उपन्यास का सा आन्नद आता है।

रामसिंह (2010) - प्रस्तुत पुस्तक लेखक विचारो को संकलित कर सम्पादित की गई है। सत्य और अहिंसा के प्रति निष्ठा रखते थे और सत्य तथा अहिंसा पहाड़ो की तरह प्राचीन है। उनका उद्देश्य था कि सबो का सभी प्रकार से मंगल हो। न किसी के प्रति राग, न किसी के प्रति द्वेश यही तो सर्वोदय की भावना है। इसी दृष्टिकोण को गाँधी दृष्टिकोण कह सकते है। गाँधीजी ने राजनीति में एकोदय के बदले सर्वोदय उनकी दृष्टि थी। अर्थनीति में भी "मूलअर्थ नही" बल्कि मानव कल्याण का था। जैसी हमारी समाजनीति होगी वैसी ही हमारी राजनीति और अर्थनीति होगी। व्यक्ति का सर्वागींण विकास यानी शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास ही सर्वागींण विकास होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं -

1. महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व को ज्ञात करना।
2. महात्मा गाँधी के जीवन दृष्टि और वैकल्पिक राजनीति को ज्ञात करना।
3. अहिंसा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को ज्ञात करना।

गाँधी "जन्मजात प्रजातंत्र समर्थक है।" विशुद्ध प्रजातंत्र की संरचना "इंच दर इंच" प्रत्यक्ष रूप से नीचे से ऊपर करना चाहते थे। प्रत्येक ग्राम अपने पड़ौसियों से स्वतन्त्र राज्य होगा, परन्तु कई क्षेत्रों में अन्य निर्भरता भी अनिवार्य होगी। वे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता व उसके साथ ही सामूहिक व सहयोगी क्रिया पर आधारित "पूर्ण प्रजातंत्र" प्रस्तुत करना चाहते थे जो वास्तव में "ग्राम सरकार" पर आधारित हो।

उपसंहार

गाँधी के राजनीतिक दर्शन को किसी एक "वाद" या "विचारधारा" के घेरे में कैद नहीं किया जा सकता। ये तो उदारवादी है और न ही अनुक्ष है न ही ये केवल समाजवादी,

क्रान्तिकारी या अराजकतावादी थे। उनमें एक साथ ही सबका समन्वयता वे क्रान्तिकारी है क्योंकि यथास्थिति को स्वीकार न करके, सम्पूर्ण व्यवस्था के दोषों को जड़ से समाप्त कर नई व्यवस्था सृजन करना चाहते थे। ये आदर्शवादी भी है क्योंकि राम-राज्य पुनः भारत में लाना चाहते थे गाँधी रूसों के समान व्यक्ति व समाज दोनों के मध्य उचित सन्तुलन बनाए रखते थे उनके अनुसार "मैं व्यक्ति स्वतन्त्रता को मूल्यावान समझता हूँ परन्तु हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि व्यक्ति अनिवार्य रूप से एक सामाजिक प्राणी है अभियंत्रित व्यक्तिवाद जंगल के पशुओं का कानून है जबकि सामाजिक नियमों के समक्ष स्वैच्छिक समर्पण, जो कि सम्पूर्ण समाज के लाभ के लिए हो व्यक्ति व समाज दोनों के लिए लाभदायक है। एल्डुअस हक्सले, प्रो. बॉस्की, ल्यूइस ममफोर्ड, लार्ड ब्राइस तथा इन्य अनेक राजनीतिशास्त्रियों व समाजशास्त्रियों ने राजनीतिक शक्तियों के विकेन्द्रिकरण का समर्थन किया है गाँधी भी मानते हैं कि जितनी बड़ी इकाई होगी, व्यक्ति की पहल व स्वतन्त्रता के लिए उतनी ही कम संभावना होगी क्योंकि बड़े संगठन व्यक्ति की स्वतंत्रता को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं तथा सभी व्यक्तियों व लघु समूहों में एकरूपता लाने का वे रेजीमेंटेशन करने का प्रयास करते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. अमर ज्योति सिंह (2011): महात्मा गाँधी और भारत, अमर ज्योति सिंह प्रकाशन, वाराणसी.

2. अनिल कुमार उपाध्याय (2012): आर्थिक नीति एवं समता गाँधी-चिन्तन, विजा प्रकाशन मंदिर, वाराणसी.

3. ए.डी. मिश्रा (संम्पा.) (2013): गांधीयन एप्रोच टू कन्टेम्परेरी प्राबलम्ब्स, मित्तल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.

4. बी.आर. नन्दा (2014): गाँधीजी की जीवनी, सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली.

5. बिद्युत चकबर्ती (2007): सोशल एण्ड पॉलिटिकल थॉट ऑफ़ महात्मा गाँधी, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिट प्रेस, नई दिल्ली.

6. डी.जी. तेन्दुलकर (2014): महात्मा, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली.

7. जी.आर. मैकलम (2017): इकोनॉमिक्स प्राब्लम ऑफ़ माडर्न इण्डिया, नई दिल्ली.

8. जयन्तानुजा बन्द्योपाध्याय (2016): सोशियल एण्ड पोलिटिकल थॉट ऑफ़ गांधी, एलायड पब्लिशर्स, बम्बई.

9. जीवतराम कृपलानी (2015): महात्मा गांधी: जीवन और चिंतन, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली.

10. गोपीनाथ धवन (2015): सर्वोदय तत्व दर्शन, सस्ता साहित्य मण्डल, प्रथम संस्करण, 1951.

11. गोपीनाथ धावन (2016): दि पोलिटिकल फिलासफी ऑफ़ महात्मा गांधी, अहमदाबाद.

12. हिमांशु बौड़ाई (2011): गाँधी एवं आधुनिक भारतीय उदारवाद, समय साक्ष्य प्रकाशन, देहरादून.

13. शंकर वसंत मुद्गल (2013): भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और साहित्य, चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर.

14. हुकमाराम सुधार (2005), गाँधी और तिलक-धर्म एवं राष्ट्रवाद, रितु पब्लिकेशन्स, जयपुर.

15. हर्ष हरदान (2012): गाँधीः विचार और दृष्टि, श्याम प्रकाशन, जयपुर, 2002.जयदेव सेठी (2012): गाँधी टुडे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.

Corresponding Author

Rajesh Kumar*

VPO-Barsana, Tehsil-Pubdri, District-Kaithal, Haryana